International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राचीन काल से मध्यकाल तक नारी शिक्षा

–कमल राणा–
शोधार्थी, (इतिहास), कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

परिचय :

प्रस्तुत शोधपत्र में प्राचीन काल से मध्यकाल तक स्त्री शिक्षा का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मध्यकाल तक भारत के एक बड़े भू–भाग पर तुर्क, अफगानों एवं मुसलमानों का कब्जा हो चुका था। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना से पूर्व यहाँ बौद्ध तथा ब्रह्मणीय शिक्षा का पर्याप्त प्रचार था, परंतु मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता के कारण अनेक हिन्दू शिक्षा केन्द्र नष्ट कर दिए गए। उनकी पुस्तकों को जलाकर राख कर दिया गया । इसके बावजूद भी प्राचीन एवं सुव्यवस्थित संस्कृति पर आधारित तथा धर्म से प्रेरित भारतीय शिक्षा की धारा मुस्लिम प्रभाव से दूर स्थित स्थानों में अबाध गति से आगे बढ़ती रही।

विषय–प्रवेश :

किसी भी देश, समाज की सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा वैज्ञानिक प्रगति उस समाज अथवा देश की शैक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है। स्त्री समाज का आधा अंग है, अतएव पुरूषों के समान नारियों के लिए भी शिक्षा की सम्यक्, रूप से आवश्यकता स्वाभाविक है, क्योंकि समाज के निर्माता स्त्री व पुरूष दोनों हैं। कालक्रमानुसार नारियों की शैक्षिक स्थिति में उतार–चढ़ाव आते रहे हैं। माता–पिता का परम कर्तव्य है– बच्चों को उचित शिक्षा देना तथा उनके जीवन को सुव्यस्थित करना। प्राचीन भारत में कई शताब्दियों तक पुत्रों के समान पुत्रियों की शिक्षा व्यवस्था में भी माता–पिता ने भरसक रूचि ली।[1]

स्मृतिपूर्वकाल में नारियों की शैक्षिक स्थिति :

200 ई. पूर्व तक स्त्रियों को पुरूषों के समान ही उच्चकोटि की वैदिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्त्रियों को वेदाध्ययन एवं यज्ञाधिकार प्राप्त थे। पत्नी के साथ ही पुरूष यज्ञ कर सकता था उसकी अनुपस्थिति में नहीं।[2]

उस युग की नारियाँ दो वर्गों में विभक्त थी–

एक सधोवधु, दूसरी ब्रह्मवादिनी ।

सधोवधु : कन्याओं का यह वर्ग विवाह से पूर्व गुरूकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करता था।

ब्रह्मवादिनी : ये दीर्घकाल तक अध्ययन करना चाहती थी। अध्ययन पूर्ण हो जाने पर विवाह कर लेती थी या आजीवन अविवाहित रहकर ज्ञान के क्षेत्र में दक्षता प्राप्त करती थी।[3]

ऋग्वेद में बीस 'मन्त्रद्रष्टा' कवयित्रियों की रचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनमें से कुछ के नाम विश्ववारा, सिकता, लोपामुद्रा, घोषा, रोमशा, अपाला तथा उर्वशी आदि हैं।[4]

याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रयी ऐसी नारी थी जिसे वस्त्राभूषणों में कोई रूचि नहीं थी अपितु उपनिषद काल में प्रचलित दर्शनशास्त्र में उसकी विशेष जिज्ञासा थी।[5]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आत्रेयी भी वाल्मिकि तथा अगस्तय ऋषि से वेदान्त की शिक्षा ग्रहण करने वाली विदुषि नारी थी।[6] इसके अतिरिक्त बुद्ध द्वारा संघों में नारियों के प्रवेश की अनुमति मिल जाने से सुसंस्कृत परिवारों की नारियों को शिक्षा प्राप्ति का सुअवसर प्राप्त हो गया। बौद्धसंघों में बहुत सी नारियाँ ब्रह्मचर्य पालन करते हुए धार्मिक एवं दार्शनिक ज्ञानार्जन करने लगी। थेरी गाथाओं की अनेक भिक्षुणियों ने निर्वाण प्राप्त किया।[7]

अशोक की पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु लंका गयी और वहां पर धर्म ग्रन्थों की व्याख्याता के रूप में विख्यात हुई।[8] शिक्षा प्राप्ति की यह सुविधा ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य तीनों वर्णों की नारियों को प्राप्त थी। नारियों की शैक्षिक स्थिति इतनी अच्छी थी कि एक स्थान पर विद्वान पुत्री की कामना करने वाले पिता की चर्चा की गई है।[9]

वैदिक काल में हिन्दु समाज नारी शिक्षा के पक्ष में था, किन्तु उत्तरकाल में वह इसे निरूत्साहित करने लगा।

स्मृतिकाल में नारी शिक्षा :

मनु स्मृति के काल तक नारियों की शैक्षिक स्थिति में एक बड़ा परिवर्तन आ गया था। वे शिक्षा की अधिकारिणी तो बनी रही किन्तु वैदिक–ग्रंथों के अध्ययन का अधिकार उनको न रहा।[10]

मनु के परवर्ती स्मृतिकार याज्ञवलक्य ने नारियों के लिए उपनयन की औपचारिक रीति को भी आवश्यक नही समझा । याज्ञवल्क्य के बाद के प्रणेताओं ने याज्ञवल्क्य की व्यवस्था को पूर्णतः स्वीकार कर लिया। यहां तक की उपनयन के अभाव में नारियों की शुद्रों तक से समानता की जाने लगी। नारियों में उपनयन का महत्त्व कम हो जाने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ कि समाज में उनकी विवाह योग्य आयु को कम करने की प्रवृत्ति जाग उठी। जिसमें जो कुछ अध्ययन काल उन्हें पितृ गृह में रहकर मिल पाता था उसमें कमी आती चली गई। वे अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में असमर्थ हो गई। स्त्रियों का कार्य क्षेत्र घर था। वे इसे संबंधित शिक्षा अपनी दादी, माता, चाची आदि से घर पर ही प्राप्त कर लेती थी।[11]

राज घरानों, राजकीय कर्मचारियों, धनी सम्पन्न घरानों तथा गणिकाओं के समाज में नारियों को उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान की जाती थी। इनकी शिक्षा का केन्द्र विशेष रूप से घर पर ही होता था। इनके लिए अध्यापक नियुक्त किये जाते थे। राजा अग्निमित्र के यहाँ गणदास और हरदत्त की नियुक्ति नारियों को विशिष्ट कलाओं की शिक्षा प्रदान करते थे।[12]

'हाला' ने जिन दक्षिण भारतीय लेखकों एवं कवियों की रचनाओं का संकलन अपने संग्रह ''गाथा सप्तशती' में किया है। उनमें सात कवयित्रियों की रचनाएँ हैं जिनके नाम है–रेवा, रोहा, माधवी, अनुलक्ष्मी, पाहायी, बद्धवाही और शशिप्रभा।[13]

संस्कृत लोक गाथाओं में सीता, मारूला, इन्दुलेखा, भवदेवी, विकटनितम्बा एवं सुभद्रा नाम की कवयित्रियों का भी उल्लेख हुआ है। कुछ स्त्रियों का झुकाव आयुर्वेद एवं स्त्री चिकित्सा की और भी था।[14] नारियां गणित में भी रूचि लेती थीं ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मध्यकाल में नारी शिक्षा :

मध्यकाल तक भारत के एक बड़े भू–भाग पर तुर्क, अफगानों एवं मुसलमानों का कब्जा हो चुका था। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना से पूर्व यहाँ बौद्ध तथा ब्रह्मणीय शिक्षा का पर्याप्त प्रचार था। परन्तु मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता के कारण अनेक हिन्दू शिक्षा केन्द्र नष्ट कर दिए गए। उनकी पुस्तकों को जलाकर राख कर दिया गया। इसके बावजूद भी प्राचीन एवं सुव्यवस्थित संस्कृति पर आधारित तथा धर्म से प्रेरित भारतीय शिक्षा की धारा मुस्लिम प्रभाव से दूर स्थित स्थानों में अबाध गति से आगे बढ़ती रही।[15] यद्यपि मुस्लिम धर्म में शिक्षा प्रदान करने को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। जैसा कि मुहम्मद साहब के इस उपदेश से पता चलता है कि ''दान में सोना देने की अपेक्षा अपने बच्चे को शिक्षा देना श्रेष्ठ दान है।''[16]

मुस्लिम शिक्षा की प्रगति में प्रायः सभी मुस्लिम शासकों का कुछ न कुछ हाथ अवश्य रहा। अकबर ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया था। मोहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना एक कर्त्तव्य है और बिना उसके मुक्ति नहीं मिल सकती। प्रत्येक मुस्लिम स्त्री–पुरूष के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है।[17] मध्यकाल में हिन्दू तथा मुस्लिम समाज में स्त्रियों की प्रतिष्ठा गिर गई थी। महिलाओं पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिये गये, जैसे–दहेज प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, जौहर, दास प्रथा, अशिक्षा, तलाक, बहुविवाह आदि के कारण स्त्री शिक्षा का ह्रास हो गया था।[18] मध्यकाल में स्त्री शिक्षा की कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी। केवल कुलीन एवं शाही घरानों की कन्याएँ शिक्षा प्राप्त करती थीं। जन–साधारण की बालिकाएं अशिक्षित ही रहती थीं या घर पर ही माँ–चाची दादी से शिक्षा ग्रहण करती थीं।

सल्तनत काल में नारी शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता था फिर भी स्त्रियों की शिक्षा व्यवस्था के लिए कहीं–कहीं विद्यालय थे। शाही घरानों की महिलाओं की शिक्षा महल में ही सम्पन्न होती थी।[19] राजकुमारी संयोगिता मदना ब्राह्मणी द्वारा संचालित विद्यालय में अध्ययन करती थीं, जहां अन्य कुमारियों के साथ कन्नौज नरेश जयचन्द की पुत्री भी अध्ययन करती थी।[20]

मुस्लिम कन्याओं के लिए 'मकतब' और 'मदरसे' की व्यवस्था थी। ऐसी भी शिक्षा संस्थाएं थीं, जहां हिन्दू बालक–बालिकाओं के लिए प्राथमिक स्तर तक सह–शिक्षा का प्रबन्ध था।[21] बालकों की तुलना में बालिकाओं की शिक्षा नगण्य थी।

नारी शिक्षा के मार्ग का दूसरा बाध्यक अल्पायु में विवाह था। 12 वर्ष की अवस्था तक बालिकाओं का विवाह हो जाता था और विवाह के बाद बालिकाएँ गृहकार्य के बोझ से इस प्रकार दब जाती थीं कि शिक्षा की ओर उन्मुख होने का अवसर ही नहीं मिलता था।[22] घर की प्रौढ़ स्त्रियों की देख–रेख में गृह विज्ञान की शिक्षा बालिकाएँ घर पर ही प्राप्त करती थीं।

मुसलमान स्त्रियों को कुरान, हदीस आदि रटाया जाता था। योग्य हिन्दू–राजकन्याओं को वेद, कल्पशास्त्र, छंदशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, दर्शन शास्त्र, तर्क शास्त्र, पुराण, उपनिशद, गणित, कामशास्त्र,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संगीत शास्त्र, चित्रकला, गृहविज्ञान आदि की शिक्षा दी जाती थी। पारिवारिक सुख शांति के लिए हिन्दू बालिकाओं को विश्व श्रेष्ठ विनय–पाठ की विशेष शिक्षा दी जाती थी।[23]

मध्यकाल में शिक्षा केवल सम्पन्न एवं उच्च घरानों की स्त्रियों के लिए ही सुलभ थी। देवलरानी, रूपवती एवं पद्मावती इस युग की विदुषी महिलाएँ थी। रजिया एक कुशल प्रशासिका थी। इब्नबतूता ने लिखा है कि ''जब वह पहुँचा तो उसे 13 विद्यालय लड़कियों के मिले। इस प्रकार स्पष्ट हैं कि मध्यकाल में स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति पहले की अपेक्षा अधिक खराब हो गई थी। मुस्लिम शासक एक तरह से स्त्रियों एवं स्त्री शिक्षा के लिए अभिशाप थे।

नारी शिक्षा के विषय :

स्त्रियों को व्यावहारिक, व्यावसायिक, आध्यात्मिक, धार्मिक तथा राजनीतिक सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। स्त्रियों से गृहकार्य के सम्पूर्ण ज्ञान की अपेक्षा की जाती थी। अतः स्त्रियों के लिए सभी कालों मे गृह विज्ञान की शिक्षा का विशेष महत्व था। प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त बालिकाएँ घर की प्रौढ़ स्त्रियों के सानिध्य में गृह विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करती थी।[24] गृह विज्ञान के अंतर्गत सिलाई–कढ़ाई की शिक्षा भी दी जाती थी। पाकशास्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। नृत्य, संगीत, वाद्य काव्य, चित्रकला, माल्यग्रंथन का विशेष महत्त्व था। कुलीन परिवारों में महिलाओं पर धनार्जन का उत्तरदायित्व नहीं था। लेकिन निम्न श्रेणी के परिवारों में कन्याएं जीविकोपार्जन में पिता अथवा पति की सदैव सहायता करती थी। अतः इन परिवारों की स्त्रियों को दासी, धात्रि, गणिका, रूपजीवा, देवदासियों जैसे स्त्रियोचित व्यवसायों के लिए अनिवार्य रूप से शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती थी। स्त्रियाँ चिकित्सा विज्ञान की भी शिक्षा ग्रहण करती थी।

स्त्रियाँ प्रायः धर्म परायण होती है अतः उनके लिए धार्मिक शिक्षा भी अनिवार्य थी।

राजकुमारियों एवं सामंतकुमारियों को राजनीतिक शिक्षा भी दी जाती थी। प्राचीन काल से ही रानियां राजनीति में अपने पतियों को सक्रिय सहयोग देती आ रही थी। अनेक विधवा रानियों ने भी पुत्रों के अव्यस्क होने के कारण शासन का भार सम्भाला था। काश्मीर के शासक क्षेमगुप्त की पत्नी विद्दा ने शासन चलाने में अपने पति की सहायता की।[25]

मध्यकाल में राजनीति में भाग लेने वाली पहली स्त्री इल्तुतमिश की पत्नी शाहतुकीन थी।[26] रजिया सुल्तान का भी समकालीन राजनीति में वर्चस्व था।

शास्त्र के साथ शस्त्र की शिक्षा भी राजकुमारियों को अनिवार्य रूप से दी जाती थी। पुरूष सैनिकों के साथ स्त्री योद्धा भी नियुक्त की जाती थीं। उच्च कुलों तथा शाही दरबारों में राजकुमारियों तथा अन्य स्त्रियों के दैहिक विकास के लिए शरीर से सम्बंधित विविध प्रकार की क्रियाओं की शिक्षा दी जाती थीं। बनी लिखता है कि स्त्रियों को अश्वरोहण, बर्छा संचालन, नृत्य, संगीत, शतरंज और चौसर खेलने की शिक्षा प्रदान की जाती थी।[27]

नाट्यशास्त्र की शिक्षा के लिए नाट्याचार्य की भी व्यवस्था रहती थी। कतिपय स्त्रियाँ योगाभ्यास की भी शिक्षा प्राप्त करती थीं। वीर राजपुतानी तारा को शारीरिक क्रिया कलापों की विशेष शिक्षा मिली

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

थी।[28] इल्तुतमिश की पुत्री रजिया युद्ध–प्रधान शारीरिक गतिविधियों में प्रवीण थी और अश्वारोहण कर पुरूषों की भांति सैन्य निरीक्षण किया करती थी।[29]

शारीरिक विकास हेतु केवल उच्च कुल की नारियाँ ही विशेष प्रकार के शारीरिक क्रियाकलापों की शिक्षा ग्रहण करती थीं। मध्य और निम्न परिवार की स्त्रियों को शिक्षा के समुचित अवसर प्राप्त नही थे। उनकी शिक्षा केवल गृहकार्यों तक ही सीमित थी।

प्राचीन भारत में स्त्रियों को जो शिक्षा के उच्च अधिकार प्राप्त थे, मध्यकाल आते–आते उनका पूर्णतः ह्रास हो चुका था। स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति का पतन हो चुका था।

संदर्भ :

1. सिंहल लता, भारतीय संस्कृति में नारी : पृ. 131–132 श्री अरविंद मन्दिर, दिल्ली 1991
2. ऋग्वेद 9.31 –या दम्पती सुमनसा सुनुत आ च धावत। देवा सो नित्याशिशः सिंहल लता – भारतीय संस्कृति में नारी : पृ. 131–132 श्री अरविंद मन्दिर, दिल्ली 1991
3. मिश्र जयशंकर , प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास पृ. 409 मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2002
4. मिश्र जयशंकर, प्राचीन भारत का सामजिक इतिहास, पृ. 414 मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2002
5. सिंहल लता, भारतीय संस्कृति में नारी, पृ. 134, श्री अरविन्द मन्दिर दिल्ली 1991
6. सिंहल लता,, भारतीय संस्कृति में नारी, पृ. 135, श्री अरविन्द मन्दिर दिल्ली 1991
7. अल्तेकर, ''पोजिशन ऑफ वुमैन इन एनशियंट इंडिया'' पृ. 12 न्यू देहली, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, 1938
8. विद्यालंकार सत्यकेतु, प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, पृ. 208, सरस्वती सदन नई दिल्ली 1994
9. सिंहल लता, भारतीय संस्कृति में नारी, पृ. 139, श्री अरविन्द मन्दिर दिल्ली 1991
10. मिश्र उर्मिला प्रकाश, प्राचीन भारत में नारी, पृ. 43 मध्यप्रदेश हिन्द ग्रंथ अकादमी 2002
11. सिंहल लता, भारतीय संस्कृति में नारी, पृ. 139, श्री अरविन्द मन्दिर दिल्ली 1991
12. अल्तेकर, ''पोजिशन ऑफ वुमैन इन एनशियंट इंडिया '', पृ. 12 न्यू देहली, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, 1938
13. गाथा शप्तसती रेवा 1.87.90 रोहा 2.63 माधवी 1.9.1. अनुलक्ष्मी 3.28.63.74.76 पाहायी 1.70 ब्रह्मवाही 1.86 शशिप्रभा 44. सिंहल लता – भारतीय संस्कृति में नारी, पृ. 140–141 श्री अरविन्द मन्दिर दिल्ली, 1991
14. नदबी एस, ''अरब भारत कें संबंध'', पृ. 122 इलाहाबाद, 1930

15. जोहरी बी पी एवं पाठक पी डी, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ. 33 विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, 1997–98
16. गुप्ता रामबाबू,''भारतीय शिक्षा का इतिहास'', पृ. 66 रतन प्रकाशन मन्दिर आगरा, 1995
17. रावल पी.एल., हिस्ट्री ऑफ इण्डियन अजयूकेशन'', पृ. 84 आगरा, 1956
18. श्रीवास्तव कन्हैयालाल व चौबे झारखण्ड, ''मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति'', पृ. 59 व 108 उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, 1990
19. श्रीवास्तव ए.एल., ''मेडिवल इण्डियन कल्चन'', पृ. 113 आगरा, 1970
20. महाकवि चन्द्रवरदायी (कृत) पृथ्वीराज रासो भाग 11. दोहा 1. पृ0. 224 पाण्या एम बी ओर दास एस एस बनारस 1904
21. श्रीवास्तव ए एल., ''मेडिवल इण्डियन कल्चर, पृ. 113 आगरा, 1970
22. ओझा पी एन, सम आसपेक्टस आफ मेडिवल इण्डिया कल्चर, पृ. 173 पटना, 1961
23. मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत दोहा 168 गियरसन, जी.ए. और द्विवेदी एस, पृ. 161 कलकत्ता 1886–1911
24. मिश्र उर्मिला प्रकाश, ''प्राचीन भारत में नारी'', पृ. 46 मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2002
25. मिश्र उर्मिला प्रकाश, ''प्राचीन भारत में नारी पृ. 49 मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2002
26. गुप्त शिव कुमार, ''मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति पृ. 40 के के पब्लिकेशन 2009
27. बर्नी जी, ''बर्नियर ट्रेबल्स इन दा मुगल एम्पायर'' द्वितीय संस्करण पृ. 156–157, स्मिथ लंदन 1914
28. शर्मा मनु, ''राणा सांगा'' पृ0 43 प्रकाशन ओमप्रकाश बेदी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवाणी वाराणसी 1993
29. ली सेमुअल खेंरेंड, ''दि ट्रेवल्स ऑफ इब्नबतूता कुताबुररहेला, जिल्द 4, पृ. 113 लंदन 1929, आगा मेंहदी हुसैन ओरयिण्टल इन्स्टीटयूट 1963